द्वितीय अध्याय 37-64

हिन्दी कहानी का विकास और अमृतलाल नागर

द्वितीय अध्याय

अ. हिन्दी कहानी का विकास और अमृतलाल नागर ।

ब. अमृतलाल नागर का हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश ।

क कहानी विषयक धारणाएँ ।

ड. अमृतलाल नागरजी की कहानियोंका वर्गीकरण ।

इ. निष्कर्ष ।

हिन्दी कहानी का विकास और अमृतलाल नागर

कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति बहुत आदिम है । विश्व के प्रायः सभी देशोंकी उपलब्ध प्राचीन साहित्य में कहानी किसी न किसी रुपमें विद्यमान है । भारतीय साहित्य में वैदिक वाङ्मय से लेकर पुराणों, उपनिषदों, जातक कथाओं और पंचतंत्र आदि में कहानी के पुराने स्वरुप को देखा जा सकता है । इन कहानीनुमा रचनओंमें या तो उपदेश देने का भाव है या धार्मिक सिध्दान्तों का रोचक स्पष्टीकरण हैं । ये कहानियाँ आधुनिक अर्थ में कहानी नहीं कही जा सकती । आज कहानी काअर्थ है "जिन्दगी के एक हिस्से से अंतरंग पहचान जताना । अनुभवों की दर्शन से सही वस्तु चुनना और उसे शिल्प की तल्खी देना ।" [1]

हिन्दी कथासाहित्य के प्रारंभिक काल से ही कहानियाँ लिखी जाने लगी थी । लेकिन उन कहानियों का मोल कम था । क्योंकि उन कहानियों में शिल्प का कच्चापन था, भाषा की गड़बड़ी थी । लेकिन उन कहानियों का उद्देश्य निश्चिय ही धर्म प्रचार था । केवल इसी बातपर उन्हें इस श्रेय से वंचित नही किंया जा सकता कि, ये उपदेशात्मक हैं । प्रत्येक कहानी के केंद्र में कोई विचार या संवेदना मौजूद रहती थी । प्रारंभिक काल में कहानियां अधिकतर धार्मिक नामपर प्रेम को चरममूल्य में प्रतिष्ठित करती दिखाई देती हैं । प्रारंभिक कहानियाँ सामन्ती चरित्रों और स्थितियों को लेकर लिखी गयी हैं । इसलिए सामंती परिवेश में लोकप्रिय 'कुलमर्यादा' स्वामिभक्ति आदिपर जोर दिया जाना अस्वभाविक नहीं है । ये कहानियां कथातत्व की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हुई हैं ।

हिन्दी गद्य के आरम्भ से ही कहानीनुमा रचनायें उपलब्ध होने लगी थी । प्रारंभिक काल में रची गयी कहानियोंमें जटमल द्वारा रचित ' गोरा बादल की कथा ' में कथातत्व मिलता है । लल्लूलाल कृत ' प्रेमसागर ' और सदल मिश्र के नासिकेतोपाख्यान भी कथात्मकता की दृष्टि से ध्यान आकर्षित करते हैं । इनसे पूर्व वार्ता साहित्य में भी थोडी बहुत कथात्मकता मिल जाती है । इंशाअल्ला खाँ की ' रानी केतकी कहानी ' शिवप्रसाद सितारे हिंद की ' राजा भोज का सपना ' भारतेन्दू हरिशचन्द्र की ' एक अदभूत अपूर्व स्वप्न ' आदि रचनायें कहानी होने का भ्रम देती हैं । लेकिन इनमें कथातत्व का सम्यक विकास नही हुआ है । " वस्तुतः कहानी में जीवन के एक अंश अथवा अनुभूति को शब्दबध्द किया जाता है ।"[2] प्रायः इन प्रारंभिक कहानीकारों में मतभेद होने लगा कि, पहली कहानी किसे माना जाय । इस प्रश्नपर विद्वानों में गम्भीर मतभेद हैं । लगभग एक दर्जन कहानियाँ इस यश की दावेदार हैं और उन्हें वरिष्ठ आलोचकों का समर्थन प्राप्त है ।

" कहानी " नामसे प्राप्त होनेवाली पहिली रचना ' रानी केतकी की कहानी ' है । सन 1803 ई के आसपास लिखी मानी गयी इस कहानी को लोगोंने पहली कहानी कहा है । लेकिन इसमें जिस प्रकार की संयोग बहुलता ओर अतिमानवीय तत्वों की उपस्थिति मिलती हैं वह आधुनिक कहानी में ग्राहय नही हैं ।" अतः यदि इसे मुस्लिम प्रभावोपन्न परम्परा की अन्तिम कहानी कहा गया है तो यह उचित ही है । "[3]

प्रारंभ में अलीगढ़ से प्रकाशित ' शिलापंख ' इस कथा मासिक में ' कल की कहानी ' के अंतर्गत दो कहानी प्रकाशित हुई थी । उन्हें देखकर ऐसा

लगता है कि, यह हिन्दी की पहली कहानी इसाई मिशनरियों द्वारा लिखी होगी । रैवरेण्ड जे. न्यूटन कृत ' जमिनदार का दृष्टांत ' यह ईसाई धर्म प्रकार के लिए लिखा हुआ है । " शिला पंख ' इस मासिक सम्पादक ने सन 1871 ई प्रकाशित कहानी को अबतक प्राप्त हिन्दी कहानियों में प्राचीनतम ठहराया है ।"[4] इन प्रारंभिक कहानियों में धर्मप्रसारका प्राबल्य अधिकतर थी यही उन कहानियों की विशेषता थी । कहानियों में पूर्णता का अभाव था । कहीं कहानियों में उपदेशात्मकता थी तो कही में वर्णनात्मकता इसी कारण ये कहनियाँ सफल नहीं हो पायी ।

किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'प्रणयनी परिणय' सन 1887 को हिन्दी की पहली कहानी के रुप में प्रस्तुत किया है । लेखक ने स्वयं उसे उपन्यास कहा है इसका कारण यह बताया गया है कि, सन 1900 तक कथा साहित्य को उपन्यास कहने का चलन था । यह कहानी सात निष्कों में बटी हुई है ।"प्रत्येक निश्क को अलग अलग खाण्ड मन लेने पर कहानी कई खाण्डों में विभक्त दिखाई पडती है । इस तरह खाण्डों में बाँटकर कहानी लिखने की प्रथा चलती रहती है । हर 'निष्क' या 'खंड' के प्रारम्भ में श्लोक बध्द नीति कथन है । ये श्लोक कहानी के रुप विन्यास में बध्क सिध्द होते हैं । किन्तु इन्हे उपन्यास का तत्व नहीं कह जा सकता ।"[5] इन कहानियों की रचनाशैली उपन्यास के ही अधिक निकट है । अतः इसे ' रानी केतकी की कहानी ' या देवरानी जेठानी की तरह उपन्यास का पूर्वाभास मानना अधिक संगत होगा ।

प्रेमचंद ने कहानी के स्वरुप के स्पष्ट करते हुए कहा है ," कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के लिए एक अंग या किसी एक मनोभाव को

प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है ।.... उपन्यास की भाँति उसमें मानव जीवन का सम्पूर्ण तथा वृहद् रुप दिखाने का प्रयास नही किया नाता न उसमें उपन्यास की भाँती सभी रसोंका सम्मिश्रण ही होता है ।"[6] सन 1900 से कहनियों में दृढ परिवर्तन एवं भाषा का सजग परिवर्तन होने लगा । हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में खड़ी बोली गद्य के उद्भव और विकास के साथ ही हिन्दी कहानी साहित्य का प्रारंभ हुआ। । डॉ. रॉय सुबेदार के मतानुसार, "हिन्दी कहानी सहित्य का जन्म उपन्यास की तरह सामाजिक और राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठ भूमि में हुआ है ।"[7] 19 वी सदी में अंग्रेजी साहित्य और बंगला सहित्य के प्रभाव से हिन्दी कहानियों में अनुवाद और मनोरंजन प्रधान कहानी लेखन का आरम्भ हो गया था । भारतेन्दू के समयतक हिन्दी कहानी स्वतंन्त्र विद्या का रुपाकार ग्रहण करने लगी थी । 19 वी सदी के अन्त में पंडित गौरीदत्त शर्मा ने सामाजिक भूमि को आधार बनाकर कहानियां लिखी । इनकी 'देवरानी जिठाणी' की कहानी में स्त्रियों की शिक्षा के सुफल को दर्शाया गया है । "जो स्त्रियां इसको पढेंगी या ध्यान देकर सुनेगी वह सुशील होकर अपनी संतान का पालन पोषण अच्छी रीति से करेंगी और कुरीतियों से बचकर गृहस्थ के प्रबन्ध में उनकी रुची होगी । पति की सेवा और विद्या की तरफ उनका स्नेह बढेंगा और ये ही उनके सुख भोगों का कारण होगा ।"[8]

सन 1900 में कहानियों का विकास दृढ़ हो गया । कहानियों में सजगता एवं रोचकता पैदा होने लगी । सन 1900 में प्रयाग से प्रकाशित होनेवाली 'सरस्वती' पत्रिका ने हिन्दी कहानी के आविर्भाव की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। । इस पत्रिका के प्रथम अंक से ही हिन्दी कहानियों का प्रकाशन होने लगा । सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन से खड़ी बोली हिन्दी साहित्य में कहानियों की अटूट परम्परा

13123
A

चल पड़ी । इस परम्परा के आरंभिक वर्षो में जो कहानियां छपी उन में सन 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत ' इंदुमती ' पंडित रामचंद्र शुक्ल की ' ग्यारह वर्ष का समय ' मास्टर भगवानदास की ' प्लेग की चुडैल ' और बंग महिला राजेंद्र बावाध के ' दुलाईवाली ' कहानियों का नाम विशेष रुपसेलिया जाता है । इनमें भी कालक्रम की दृष्टिसे किशोरीलाल गोस्वामी की रचना ' इन्दुमती ' सन 1900 सर्वप्रथम ठहरती है ।

' इन्दूमती ' की चर्चा प्रायः प्रत्येक आलेचकोंने की है, लेकिन इसपर 'टेम्पेस्ट' की छाया मानकर इसकी मौलिकता पर प्रश्नचिन्ह भी लगाया गया है । " आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी लिखा था कि यदि इसपर किसी अन्य भाषा की कहानी की छाया नही है तो हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी है । इसके बाद उन्होंने ' ग्यारह वर्ष का समय ' और ' दुलाई वाली ' के नाम गिनाये । "[9]

भारतेंदु युग में की सहित्य की अन्यविधाओं की तरह कहनियां लिखी गयी थीं । भारतेन्दू की 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' कहानी इसका द्योतक है । कथावस्तु एवं भाषाशैलीकी दृष्टि से इस कहानी का महत्व है । यह कहानी आत्मकथनात्मक शैली में लिखी हुई है । इसमें समकालीन सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि में मानव की मनोवृत्ति का विश्लेषण किया है । भारतेन्दू के साथ साथ अन्य लेखकोनेभी महत्वपूर्ण स्थान दिया है । तत्कालिन परिस्थिति के अनुसार लोगों के मन में परतंत्रता के प्रति देशभावना और देश के प्रति प्रेम तथा अपने अधिकारों के प्रति प्रेरणा निर्माण करने का महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी के कथाकारोंने समजिक कहनियां लिखकर किया । इस तरह भारतेन्दू यग में कहानी का विकास हो गया ।

भारतेन्दु युग से प्रेरणा लेकर द्विवेदी युग में कथा एवं रुप एवं विशिष्ट शैलियों का विकास हो गया । उस समय साहित्य और समपर अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति का पर्याप्त प्रभाव था और यांत्रिक युग के कारण मानव वैदिक जीवन में व्यस्तता और जटिलता का सूत्रपात हुआ था । इसी कारण तत्कालिन परिस्थिति ध्यान में लेकर इस युग के कथाकारोंने कहानियां लिखी । इस समय कहानियों में कल्पना शक्ति के सहारे कम से कम पात्रों और घटनाओं की सहायता से कथानक, चरित्र, वातावरण, प्रभाव आदि की सृष्टि हो गयी । द्विवेदी युग में 'सरस्वती' और 'सुदर्शन' पत्रिकाओं द्वारा अनेक कहानियां प्रकाशित हो गयी । इस युग के प्रमुख कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद एवं प्रेमचंद महत्वपूर्ण माने गये हैं ।"कहानियों में जीवन की समस्याओंका अंकन व्यक्ति की अनुभूतियों का चित्रण अन्तर्द्वन्दों और संघर्षो की अभिव्यक्ति जयशंकर प्रसाद के आगमन से हुई ।" [10]

प्रसाद की पहली कहानी 'ग्राम' सन 1911 में 'इंदू' मासिक पत्र में प्रकाशित हुई थी । वे संस्कृतिक चेतना के कहानीकार थें । और उनकी कहानियों में आदर्शवादिता और भावुकता की गहरी छाप थी । 'इंदू ' और 'सरस्वती' इन दो मासिक पत्रिकाओंने हिन्दी कहानी की गति को आगे बढाया । प्रसाद के साथ गुलेरी जी की पहली कहानी ' सुखमय ' जीवन सन 1911 में छपी । चतुरसेन शास्त्री की पहली कहानी ' गृहलक्ष्मी ' 1994 मे छपी जब कि राधिकारणसिंह की प्रसिध्द कहानी '' कानों में कँगना ' सन 1913 में प्रकाशित हो चुकी थी । प्रेमचंद की पहली प्रकाशित कहानी ' 'सौत' मानी गयी है जो सरस्वती मासिक से प्रकाशित हुई ।

विश्वंभरनाथ कौशिक की सामाजिक कहानियाँ ' रक्षा बन्धन " ताई' आदि

शिल्प में आरम्भिक छाया लिए हुए भी मानव हृदय की सच्चाई को सरल रुपमें प्रस्तुत करती है । पं. चन्द्रधर शमी गुलेरी जी की सन 1915 में प्रकाशित ' उसने कहा था ' हिन्दी साहित्य की निधि बन गयी । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसके विषय में लिखा है " इसमें पक्के यथार्थवाद के बीच सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यन्त निपुणता के साथ संपुटित है " प्रेम के दैवी स्वरुप और दिए हुए वचन पर प्राण बलिदान करनेवाले सिपाही का चित्रण उसकी निष्ठा का परिचायक है । वर्तमान सन्दर्भो में उसका बलिदान व्यंग्यात्मक रुप ले सकता है, किन्तु तत्कालीन युग चेतना में मनुष्य की ईमानदारी और उच्च नैतिकताका यथार्थ स्वरुप है ।

फलतः कहानियों के क्षेत्र में अनेक युगप्रवर्तक कहानीकारों को कलात्मक आदर्श के रुप में स्वीकार कर उनकी परिपाटी के अनुसरण करनेवालों के संस्थान या स्कूल बनाए गये । हिन्दी कहानी साहित्य के भीतर पांच स्कूल माने गये हैं । 1 प्रसाद स्कूल, 2. प्रेमचंद स्कूल 3. जैनेंद्र स्कूल 4 अज्ञेय स्कूल 5. यशपाल स्कूल । इन सभी स्कूलों और उनके अंतर्गत आनेवाले कहानीकारों का विस्तृत्व विवेचन करना हमारा अमीष्ट नही है । हमारे विवेच्च कहानीकार श्री अमृतलाल नागर प्रेमचंद स्कूल के अंतर्गत आते हैं । अतः प्रेमचंद परम्परा का ही संक्षेप में विवेचन उचित होगा ।

प्रेमचंद के लिए साहित्य की संज्ञा समाज सापेक्ष थी । उन्होंने कहानी कोजीवन और समाज के यथार्थ धरातल पर लाकर खड़ा किया । डॉ. परेश के शब्दों में " कहानियां प्रेमचंद से पूर्व भी लिखी गयी हैं, किन्तु जब प्रेमचंद इस क्षेत्र में आये

तो जैसे इनकी कहानियाँ ही कहानी की कसौटी बन गयी । अन्य प्रकार की मनोरंजक और रोमांचकारी तत्वों से भरी हुई कहानियों को प्रेमचंद के साहित्य ने जैसे यकायक व्यर्थ कर दिया ।"[12] प्रेमचंद से पूर्व की कहानियों में ऐसी शक्ति और क्षमता नहीं थी कि उन्हें किसी परम्परा या स्कूल के रुपमें देखा जाता । उन्होंने साहित्य की सोद्देश्यता को प्रमाणित कर सामाजिक संदर्भो में दायित्व निर्वाह की भावना से अनेक कहानीकारों को प्रेरित किया । " मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय समाज की परम्पराओ, अन्ध विश्वासों का यथार्थ उनकी रचनाओं में मिलता है ।"[13] सामाजिक प्रतिबध्दता की भावनासे ओतप्रेत लेखकों ने प्रेमचंद के नेतृत्व में हिन्दी कहानी को सुदृढ़ आधार ही प्रदान नही किया, वरन उसे अभिनय रुप प्रदान किया ।

प्रेमचंद स्कूल के प्रमुख कहानीकार है - विश्वंभरनाथ शर्मा, कौशिक, सुदर्शन, ज्वालादत्त शर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा, रांगेय राघव, अमृत लाल नागर । प्रेमचंद की अन्य कहानियो में ' बडे घर की बेटी, पूस की रात, बूढी काकी, कफन, ईदगाह, नशा आदि सैकडो कहानियाँ सामाजिक जीवन के सजीव चित्र है । " सामाजिक यथार्थवादी होते हुए भी इनकी कहानियां युगानुरुप मानवयता का चित्रण करती है । समाज की समस्याओं के विस्तृत रुप मानवीय संघर्ष, राष्ट्रीय और विश्वव्यापी परिवर्तनी का प्रभाव यथा तथ्य रुप में चित्रित किया गया है ।"[14]

प्रेमचंद और उनकी परंपरा के कहानीकारों ने सामाजिक यथार्थवाद और युगबोध को लेकर कहानियां लिखी । ये कहानियाँ समाज की समस्याएँ एवं विषमताओं का यथार्थ चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं । प्रेमचंद परम्परा के कहानीकारों

में सामाजिक जबाब देही और यथार्थ चित्रण की प्रवृत्ति पाई जाती है । इनके पात्र जीवन में देखे-सुने व्यक्ति है । इस स्कूल की कहानियों में जीवन की व्यापकता और विविधता अधिक है । प्रेमचंद के युग में कहानियों का सर्वांगीण एवं समग्र विकास हुआ है । यथार्थ के भीतर आदर्श या संकेत प्रेमचंद परम्परा की प्रमुख विशेषता है । हिन्दी कहानी की प्रगती के संबंध में श्रीपत रॉय ने लिखा है " हिन्दी कहानी प्रगती के पथपर है और हम उसके प्रति अतिशय आशावान है । उसमें गहराई, अनुभूतियो के प्रति जबर्दस्त ईमानदारी, शिल्प के प्रति बड़ी सावधानी और समूचे लेखनरुप के प्रति एक भयंकर गंभीरता आती जा रही हैं । ये सभी बड़े शुभ और आशाकर लक्षण हैं ।".[15]

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी कहानी में अनेक भावभूमियां ग्रहण की । कहानी शिल्प में नए नए प्रयोग किए गए । नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, सक्रीय कहानी आदि विभिन्न कहानी आंदोलनों के माध्यम से कहानी नए नए रुपाकार ग्रहण करती है । परंतू सन 1950 के आसपास पाश्चात्य कहानीकारों को नई पीढी के साथ चलने में प्रयत्नरत हिदी कहानी देखाई देती हैं। । ऐसे लेखकों में यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, भैरवप्रसाद गुप्त, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णू प्रभाकर, अमृतराय, बलवंतसिंह तथा हमारे विवेच्य कहानीकार श्री अमृतलाल नागर आदि प्रमुख हैं । इन लेखकोने प्रेमचंद के दायरे में रहकर उनकी तरह राष्ट्रीय एकात्मता की भावनाओंको अपने कहानी द्वारा उजागर करने की कोशिश की है । उन लोगों ने अपने कथा साहित्य में हिन्दू मुस्लिम संस्कृति की एकता और न्याय और मानवता की जय का आदर्श मुखरित किया है । इन लेखकोंने अच्छी कहानियां लिखी है पर वे नई परिस्थितियों में अपने को पूर्णतः ढालने में असमर्थ रहे हैं ।

परंतु प्रयोग और परिवर्तन के युग में पिछले दौर के उपरोक्त कहानी कार एक स्वस्थ और स्थिर दृष्टिकोण लेकर चल रहे है ।" प्रेमचंद युगीन हिन्दु मुस्लिम समाज विघटन के कगार पर खड़ा एक हल्के से धक्के की राह देख रहा था । किन्तु नागरजी ने उसे एक शृंखलित संदर्भ देकर कहानियों के रुप में प्रस्तुत किया है ।"[16]

प्रेमचंद ने निश्चय ही अपने युग में मध्यवर्गीय मुख्य रुपसे ग्रामीण समाज की पीड़ा को समझा । पारिवारिक विघटन, शिक्षा का प्रभाव, शहरी सभ्यता के प्रभाव और समाज की आन्तरिक झाँकियों को चित्रबध्द किया हैं । यह कारण है कि उनकी युग की कहानियां दृढ बन गयी और पूर्ण रुपसे विकसित हो गई । इस प्रकार, हिन्दी कहानी साहित्य को उत्थान वास्तवमें बीसवी सदी के प्रारभिक दो दशकों में हुआ और अनेक सक्षम लेखकों को पाकर हिन्दी कहानियां अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने में सफल हो गई, उन्हें अपनी व्यापक भावभूमि प्राप्त हो गई और उनका कलात्मक उत्कर्ष शैलियों की अनेक रुपता में प्रस्फुटित हुआ । हमारे विवेच्य कहानीकार अमृतलाल नागर इसमें कहातक सफल हुए यह देखना है ।

अमृत लाल नागर का हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश

अमृतलाल नागर प्रेमचंद्र युग के कहानीकारों में से एक है । नागरजी ने साहित्य यात्रा का प्रारंभ ही कहानी सृजन से किया । उनका हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश सन 1934 में हुआ । इस के बारे में उन्होने स्वयं लिखा है " सन 1934 में ' माधुरी ' पत्रिका में कुछ कहानियां प्रकाशित होने से मेरे लिए साहित्य का द्वार सम सम खुल गया । "[17] प्रारंभ में नागर जी का साहित्यिक जीवन संघर्षशील रहा। । लेखन क्षेत्र में नये लेखक की कठिनाइयां नागरजी को झेलनी पड़ी कई बार उन्हें कहानियां न छपने पर निराश होना पडा । प्रारंभिक कहानी लेखन के सम्बन्धमें नागरीने लिखा है -- " उन आरंभिक रचनाओंकी पांडुलिपियाँ भी अब सुलभ नहीं, केवल स्मृति में यह संस्कार शेष है कि, उनमें कुछ कहानियां मुझे बहुत अच्छी लगी थी । उन आरभिंक कहानियों में समाज सुधार और राष्टीयता का गहरा पुट था, यह मुझे याद है ।"[18]

नागरजी ने साहित्य जगत में परिश्रम पूर्वक अपने पैर जमाए हैं न छपजाने की निराशा होते हुए भी उनके उत्साह में कमी नहीं आई । सन 1934 में उनकी प्रथम कहानी छपी और उसके पश्चात अनेक पत्र पत्रिकाओं में छपती रही। सन 1935 में उनकी प्रथम कहानी संग्रह 'वाटिका' छप जानेपर प्रेमचंदजीने इस संग्रह के विषयमें लिखा था " यह तो गद्य काव्य की सी चीजे हैं । मैं रियालिस्टिक कहानियां चाहता हूं, जिनका आधार जीवन पर हो, जिन सेजीवनपर कुछ प्रकाश पड़ सके । मैंने 'वाटिका' के दो चार फूल सूंघे । अच्छी खुशबू है । "[19] इस से प्रेरित होकर नागरजीने प्रेमचंद जी की कथ्य के मर्म को आत्मसात किया और वे उनके एक सफल उत्तराधिकारी के रुप में प्रख्यात हुए । उन्होंने अपने कलमको संवारने और विचारों की परिपक्वता

के लिए देशी एवं विदेशी साहित्य का अध्ययन किया ।

अमृतलाल नागरजी ने आगे चलकर मोयासा की कहानियों की अनुवाद करना शुरु किया तथा उन्होंने ' काला पुरोहित ' विष्णू भटट् गोड से की मराठी पुस्तक का अनुवाद 'आँखों देखा गदर' नामसे किया है । माझा प्रवास का अनुवाद 'आँखो देखा गदर' रुप में क.मा मुन्शी के तीन गुजराती नाटकों का अनुवाद ' दो फक्कड ' नाम से और मामा वरेकर के मराठी नाटक का अनुवाद 'सारस्वत' नाम से किया। । इस तरह उन्होंने अपनी पकड़ शब्दोंपर मजबूत की । अनुवाद की प्रेरणा का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं " यह अनुवाद कार्य मैं छपाने की नियत से उतना नही करता था , जितना की हाथ साधने की नियत से । अनुवाद करते हुए मुझे उपयुक्त हिन्दी शब्दों की खोजन करनी पडती थी, इससे मेरा शब्द भंडार बढा । वाक्यों की गठन भी पहले से अधिक निखरी ।" [20]

अमृतलाल नागरजी को प्रेमचंद के उपदेश ने यथार्थवादी कहानियां लिखने के लिए प्रेरित किया । वे पहली कहानी के रुप में 'शकीला की मां' लिखकर यथार्थ वादी लेखक साबित हो गये । उनके युग के अन्य कहानीकार के रुप में यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, भैरवप्रसाद गुप्त, चंदगुप्त विद्यालंकार, विष्णू प्रभाकर, अमृतराय, बलवंतसिंह इन लोगों ने भी अपने कहानियां में यथार्थ को स्थान दिया ।

' शकीला की माँ' कहानी नागरजी ने सन 1936 में लिखी थी । नागरजी के लेखन के आरंभिक दौर में लिखी गई इस कहानी में तत्कालीन निम्नवर्गीय मुस्लिम समाज का यथार्थ चित्र सहज बोलचाल की भाषा में खींचा गया है । यह कहानी नागरजी के कहानी लेखन की विकास की पहली मंजिल कही जा सकती है जो सन 36 से आरम्भ होनेवाले कहानी जीवन का परिचय भी देता है ।

' शकीला की माँ इस कहानी में उन्होंने लखनऊ की गलियों के एक विशेष वर्ग का चित्रण किया है, जो वेश्या जीवनपर आधारित है । " बुढ़ापे में आर्थिक विसंगतियों से जूझती ये वेश्याएँ, निराधार होकर बदहाली की किस अवस्था में जी रही थी, इसका जीवन्त उदाहरण ' शकीला की माँ, है "।[21] ' उन्होंने इस कहानी द्वारा उन लोगोंपर व्यंग्य कसा है जो लोग " तन की कमाई खाने वाला यह खंडहर कोठरियों का वर्ग अपनी बेलाग और विवश जिन्दगी का चित्र है, जहाँ मात्र स्वार्थ है, गाली गुप्ता है, यौनाचार है और सन 36 के लखनवी समान के नवयुवको का आमचलन है ।"[22] ' नागरजी लखनऊ के उस चौक में रहें हैं, उन्हें लेखक बनने के लिए प्रेरित किया, वह उस समाजमें रहे हैं जो उन्हें सामाजिक यथार्थवादी बननेपर मजबूर किया ।

अमृतलाल नागर सामाजिक यथार्थवादी लेखक के साथ - साथ हास्य-व्यंग्यकारके रूप में भी उभरे हुए हैं । उन्होंने हास्य-व्यंग्य पर बहुत सी कहानियाँ लिखी हैं । एक तरह से यह विशेषता उनकी प्रकृति में गूंथी हुई है । उनकी रचनाएँ पाठकों के मन में रोचकता पैदा करती हैं । उनकी हास्य-व्यंग्य रचनओं में ' नबाबी मसनद ' सन. 1939 में लिखी गई उनकी पहली-कहानी संग्रह के रूप में प्रकाशित हो गई । ' नबाबी मसनद ' यह उनकी हास्य एवं खुश गप्पियों का जीवित आधार है । यह नागर की रचनाशैली काफी लोकप्रिय हुई । इस हास्य-व्यंग्य से नागरजी ने पाठकोंके मन को जिता है । उनकी हास्य-व्यंग्य की प्रशंसा करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा ने नागरजी की कलम द्वारा तराशे हुए हास्य-व्यंग्य से यथार्थ को मुक्त करते हुए लिखा है - " जीवन के सब से निचले स्तर तक पैठने और अप्रत्याशित बीभत्सता का उद्घाटन कर ने में वह अद्वितीय हैं । साथ ही वह हास्यरस के जाने माने लेखक

हैं । हास्य के लिए वे आसपास के सामाजिक जीवन के आलम्बन ही नही चुनते, पौराणिक गाथाओं और भटि यारनों के किस्से कहानियों का भी सहारा लेते हैं ।" [23]

अमृतलाल नागरजी की कहानियां पाठकीय संवेदनाको छूती हैं, उसके मानस को हिल्लोलित करती हैं और उसे सोचने पर विवश कर देती है । उनकी कहानियों का मूल उद्देश सुधारवादी और मानवतावादी हैं इसलिए उनकी रचनाएँ लोकप्रिय बन गयी । और इसी लोकप्रियताने उन्हें उनका हौसला और भी बुलंद कर दिया। । इसतरह नागर ने हिन्दी कहानी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया ।

नागर के कहानी लेखन के आरंभ तक हिन्दी कहानी साहित्य का समूचित विकास हुआ था । प्रेमचंद, प्रसाद जैसे युग के प्रवर्त्क कहानीकारोंने हिदी कहानी को चरम उत्कर्ष तक पहुंचाया था । प्रेमचंद और उनकी कहानी परम्परा के लेखकोंने हिन्दी कहानी साहित्य में सामाजिक यथार्थ चित्रण को एक निश्चित धारा प्रस्थापित की थी । इस परम्परा के एक सशक्त लेखक के रुपमें नागरजी हिन्दी कहानी क्षेत्र में अवतारित हुए और इस परम्परा को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । नागर ने कहानी साहित्य के साथ साथ अन्य साहित्य का सृजन भी किया है । नागरजी कृत कहानीसंग्रह इसप्रकार हैं --

1. नवाबी मसनद 1939
2. तुलाराम शास्त्री , 1941
3. एटम बम 1956
4. पीपल की परी , 1962
5. पांचवा दस्ता और अन्य सात कहानियां 1970

6.	भारत पुत्र नौरंगीलाल	1971
7.	हम फिदाए लखनऊ	1978
8.	कालदण्ड की चोरी	1963
9.	मेरी प्रिय कहानियां	1972
10.	सिकंदर हार गया	1973

कहानी विषयक धारणाएँ

नागरजी की कहानियां और उनके कहानी विषयक वक्तव्य प्रमाणित करते हैं कि, वे कहानी को यथार्थ की प्रतिकृति मानते हैं । यद्यपि उन्होंने अपनी कहानियों के सम्बन्ध में कुछ भी स्पष्ट नहीं कहा है किन्तु फिर भी उन्होंने ' 'मेरी प्रिय कहानियां ' के अंतर्गत लिखा है, कि " मेरी ये रचनायें जीवन के यथार्थ बोध से निःसंदेह जुड़ी हुई हैं और इन कहानियों का शिल्प इनमें निहित बातों को ही उमगा और संवारा है । मैंने शिल्प के लिए ही शिल्प का मंत्र आज तक नही साधा । इधर कुछ वर्षो से प्रायः एक भी कहानी नही लिखी । इसका एक कारण यह भी है कि साहित्य के आलोचकों में मेरी कहानियों का कोई विशेष नोटिस नही लिया । कारण जो भी हो पर यह स्थिति मेरे सृजनशील मन को कहानियां रचने लायक प्रफुल्लित नही कर पाती । पत्र पत्रिकाओं के द्वारा मुझसे अब भी कहानियां मांगी जाती है, पर सिर्फ ऑर्डर सप्लाई के लिए लिखना मुझे अच्छा नही लगता है ।"[24]

लेखक का यह वक्तव्य उनकी कहानी विषयक धारणा को प्रकट करता है । इनकी कहानियोंका मूल आधार मध्यवर्गीय जीवन है किन्तु इन्होंने मुख्यतः

नगरीय जीवन के सुख दुख संघर्ष, समस्याओं , सभ्यता आदि को विवेचन के लिए चुना है । नागरजी की महत्वपूर्ण विशेषतः यह भी है कि, वे कहानी साहित्य के हर पहलूोकोलखनऊ कों केंद्र माना है । लखनऊ मे चित्रित सामाजिक विसंगतियों, विकृतियों पर उन्होंने प्रहार किया है ।

नागरजी कहानी को यथार्थ की प्रतिछाया मानते हैं, और वे केवल कहानी लिखने के लिए नहीं लिखते, बल्कि उनकी कहानियां सोद्देश्य होती है । उन्होंने कहानी लिखते समय केवल शिल्प को शिल्प के लिए कभी न काम में नही लिया है । उनके अनुसार कहानी का शिल्प हर स्थिति में उसके कथ्यसे प्ररित और पृष्ठ होना चाहिए । यदि वह आरोपित होगा तो कहानी की सत्ता ही अविश्वसनीय प्रतीत होगी । उनकी कहानी इसकी गवाही देती है ।

अमृतलाल नागरजी की कहानियां सोद्देश्यपूर्ण हैं । व्यंग्यपूर्ण एवं विनोदी शैली से उन्होंने पाठकोंको हंसाया है और रुलाया भी है । नागरजी सामाजिक यथार्थ वादी होने के कारण उनकी रचनाएं एवं उनके पात्र जिंदादिल लगते हैं । कहानियों में कथातत्व की अनिवार्यतापर नागरजीने पर्याप्त जोर दिया है । उनकी स्वयं की कहानियां इसका प्रमाण है । " सामाजिक धरातल पर रचित, हास्य व्यंग्य से तराशी हुई ये रचनाएं जीवन के सर्वांगीण चित्रों का संग्रह है ।"[25] नागरजी की कहानियोंका मूल स्थान निम्नवर्गीय जीवन है । इस जीवन में चित्रित विविध समसयाओं का अंकन कर उसे उन्होंने मूल सेही उखाड फेंकने की कोशिश की है, और उन लोगोंको सही रास्ता दिखलाया जो अन्धविश्वास, रुढ़ियां, अत्याचार एवं विवशता में घेरे हुए थे ।

नागरजी ने अपनी कहानी विषयक धारणाको स्पष्ट करते हुए अपनी कहानियों के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप में कहा है, उससे प्राप्त निष्कर्ष ये हैं :

1. "कहानी यथार्थ को छोड़कर वास्तविक धरातल पर खड़ी नही हो सकती हैं। । वह यथार्थ की प्रतिकृति भी है और प्रतिलिपि भी ।" [26]
2. नागरजी कहानी लिखने के लिए कहानी लेखन को कभी भी प्रोत्साहित नही कर सके है ।
3. " नागरजी कहानी में संवेदना को तो महत्व देते है किंतु संवेदनाओं की विविधता भी उन्हें काम्य है ।" [27]

नागरजी की कहानियां विविधवर्णी प्रवृत्तियों को लेकर लिखी हुई है । उनकी सामाजिक यथार्थवादी एवं हास्य व्यंग्य रचित रचनायें जीवन के सर्वांगिण चित्रों का संग्रह है ।

अमृतलाल नागरजी की कहानियोंका वर्गीकरण :-

अमृतलाल नागर सामाजिक यथार्थवादी लेखक होने के कारण उनकी अधिकांश कहानियां सामाजिकजीवन के यथार्थ पर आधारित हैं । नागरजी की कहानियोंका सामाजिक यथार्थ स्वस्थ, हास्य - व्यंग्य से आल्पावित हैं । डा. सुदेश बत्रा के अनुसार " कहानी कला के उत्कर्ष काल में लेखक की बौध्दिक चेतना ने समाज के गुणो अवगुणों का स्वतंत्र लेखाजोखा प्रस्तुत किया है और सामाजिक सदस्यता पर चोट करनेवाली हर रुढि अन्धविश्वास पर व्यंग्य किया है । " [28] इस सामाजिक यथार्थका मूलस्वर

रखनेवाली कहानियों के अतिरिक्त उनकी कहानियों में विविधवर्णी प्रवृत्तियों का विश्लेषण हुआ है, जिसमें मनोविश्लेषणात्मक वृत्ति, राजनीतिक चेंतना, तथा हास्य व्यंग्य मूलकता आदि प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं ।

अमृतलाल नागरजी की कहानियों को निम्न लिखित चार विभागों में देखा जा सकता है --

1. सामाजिक चेतना की कहानियां :-

नागरजी मूलतः सामाजिक यथार्थवादी रहे हैं । इसी कारण इस वर्ग के अंतर्गत आनेवाली कहानियों की संख्या सर्वाधिक है । नागरजीने स्वतंत्रतापूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर काल के बदलते सामाजिक परिवेश का चित्रण किया है । उनकी इन कहानियों को पढ़ते हुए ऐसा महसूस होता है, जैसे अपनी आंखों से देखे हुए किस्से को हम सुन रहे हैं ।" लखनऊ नगर की पृष्टभूमि इन कहानियों की अप्रतिम विशेषता है । समाज की प्रत्येक समस्याको इन्होंने अपनी कलम के सहारे गति दी है, समस्त अत्याचारो को व्यंग्यात्मक बाना पहनाकर पीडित पात्रों की पीड़ा को स्वयं भोगते हुए उनका मानवीय रुप उभारा गया है ।"[29]

समाज जीवन की असंगतियों एवं सामाजिक समस्याओं को युग जीवन की सजीव पृष्ठभूमि पर उन्होंने अभिव्यक्त किया है । उनकी सामाजिक कहानियां सोदेदेश्य हैं और उनमें पात्रों के यथार्थ चित्रण की ओर लेखक का ध्यान अधिक रहा है । नागरजी की यथार्थ की कहानी संग्रहों में 'मेरी प्रिय कहानियां,' 'सिकंदर हार गया,' 'पांचवा दस्ता और अन्य सात' आदि आते हैं । समाजमें चित्रित सामाजिक विषमता, अन्धविश्वास, रुढ़ियां स्त्री-पुरुष इनका लेखक ने यथार्थ चित्रण ही नहीं किया है

है वरन क्रांतिकारी जीवन मूल्योंकी ओर अग्रेसर होने की प्रेरणा भी दी है । उनकी प्रतिनिधि सामाजिक कहानियां है ' शकीला की माँ ' गोरख धन्धा , बंदिनी, दो आस्थाएं, सती का दूसरा ब्याह, मोती की सात चलनियां, आदि । लेखक ने 'शकीला की माँ' में तत्कालीन निम्न वर्गीय मुस्लिम समाज का यथार्थ चित्र सहज बोलचाल की भाषा में खींचा है । ' गोरख धन्धा ' के अंतर्गत लेखक ने उन लोगों का जिक्र किया है जो समाज में चित्रित सुशिक्षित बेरोजगार रहकर भी किस तरह लोग गोरख धन्धे करनेपर मजबूर हो जाते हैं । इसका जीता जागता उदाहरण इक कहानी में है । ' बंदिनी ' में लेखक ने नारी शोषण की समस्या को प्रस्तुत किया है । ' आस्थाएं ' कहानी नई और पुरानी पीढी के संघर्ष को व्यक्त करती है । 'सती का दूसरा ब्याह' के अंतर्गत समाज में चित्रित नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है । 'मोती सात चलनियां' इस कहानी में अन्तर्जातीय प्रेम और विवाह की समस्या को यथार्थ दृष्टिसे देखा गया है । इसके साथ ही इसमें हिन्दू मुस्लिम एकता को सहज और सरल रुपमें प्रस्तुत किया है । डा॰ सुदेश बत्रा इस कहानी का वर्णन करते हुए लिखती हैं, " इन्सान की अहमियत भितरी तहों में एक है; किन्तु इनपर मजहबों के अलग अलग रंग के मुलम्मों ने उसको निकली बना दिया है । भारत में हिन्दु मुसलमानों का संघर्ष सदा जगजाहिर रहा, किन्तु उनके भाई-चारे की समान धडकनों को सदा नकारा गया ।"[30] अमृतलाल नागरजी मूलतः सामाजिक यथार्थवादी लेखक के रुप में हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे । इसलिए उनकी अन्य विविधवर्णी रचनाओं से जादह सामाजिक रचनाएँ हैं ।

2. राजनितिक पृष्ठभूमिपर रचित कहानियां :-

अमृतलाल नागरजी की इस वर्ग के अंतर्गत आनेवाले कहानियों की संख्या बहुत कम है । नागरजी की कुछ कहानियों में राजनितिक स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार का वर्णन है । वस्तुतः ये कहानियां सामाजिक रही है, परंतु देश तथा विश्व की राजनीति से संबंधित होने के कारण उन्हे राजनीतिक कहानियां कहना ही उचित है । विश्व राजनीति से प्रेरित घटनाएं मानव के सामाजिक जीवन को प्रभावीत करती है । डॉ. बत्रा राजनीतिके बारेमें कहती है "राजनीति के सत्तामद के कारण एवं उसके आव्हान पर राष्ट्रीयता के विभिन्न सन्दर्भ देश के इतिहास में बन जाते हैं । राजनीति स्वार्थ अथवा महत उद्देश से प्रेरित होती है । और संवेदनशील मानवता मनुष्य के भीतर स्थित 'सत' को जाग्रत करने का प्रयत्न करती है ।"[31] नागरजीने समाज में चित्रित राजनीति कुरतियों पर व्यंग्य एवं मानव की आत्मिक प्रवृत्तियों के सहज प्रवृत्तियों का अंकन है । उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि रचित कहानियों में '14 अँप्रेल' एक था गांधी', एटम बम, जय पराजय, लखनवी होली , तथा देशसेवा शाह मदोरों की, यह कहानियां उजागर हुई है ।

' 14 अेप्रेल के अंतर्गत लेखकने भारत स्वातन्त्र से पूर्व द्वितीय विश्व युध्द के समय अंग्रेजी राज्य में घटनेवाली घटना का जीवंत चित्र खींचा है । धन वैभव के लिए यह दुनिया अन्धी दौड़ में किस तरह भागती है और बरबाद होकर फिर बनती है . इसका मार्मिक ढंगसे लेखक ने वर्णन किया है । 'एक था गांधी' यह कहानी नागरजी का एक अनोखा प्रयोग है । इस कहानी में उन्होंने रंगोको प्रतिक मानकर समाज में चित्रित वर्गभेद, अन्याय को मिटाने का प्रयास किया है ।'एटम

बम' यह कहानी मानवीय संवेदना का गहरा स्वर प्रस्तुत करती है । हिरोशिमा और नागासकी पर अमरीका द्वारा एटम बमडालकर सामूहिक संहार, सर्वनाश करना इस मानवीय इतिहासकी नृशंस घटना को लेखकने सजीव बनाया है । इस नृशंस घटना का शिकार हुआ और इस कहानी का पात्र कोबायाशी कहता है --

" मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया था जिसकी यह सजा मुझे मिल रही है ? अमीरों और अफसरों को छोडकर क्याऐसा आदमी था जो यह लड़ाई चाहता था ? दुनिया अगर दुश्मनी निकालती, तो उन लोगोंसे । हमने उनका क्या बिगाड़ा था हमें क्यों मार गया ?"[32] तरह लेखक ने इस कहानी में मासूम असाहाय, लोगों को दयनीय, जीवन का वर्णन किया है । 'जय पराजय' इस कहानी कें अंतर्गत लेखकने एक क्रांतिकार नेता का अपने देश के प्रति प्रेम, राष्ट्रीयता और उसके लिए त्याग की भावना को एक सजीव चित्र खड़ा किया है । लखनवी होली में रंगों के बहाने स्वाधीनता के बाद की देश की राजनीति पर कटु प्रहार किए हैं । इसमें राजनीति और संस्कृति के प्रभावों को तीखे व्यंग्यों के माध्यम से व्यक्त किया है ।'देश सेवा शाह मदारों की' यह कहानी गहरा राजनीतिक व्यंग्य है और इसमें राकीय नेताओं और पूजीपतियों के स्वार्थ को व्यक्त किया है । नागरजी की राजनीतिक पृष्ठभूमिपर रचित कहानियां पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनीति से प्रेरित रही हैं ।

3. **मनोविश्लेषणात्मक कहानियां** :-

नागरजीने मनोवैज्ञानिक पर आधारित कहानियां बहुत कम लिखी है । उनकी मनोविश्लेषात्मक कहानियों के बारे में डा. बत्रा ने अपना मन्तव्य व्यक्त किया है " विविध विषयों और अनुभूतियों की कलात्मक व्यंजना के साथ ही नागर

जी ने मन की अनुभूतियों एवं काल्पनिक अनुभूतियों को विश्लेषणात्मक रुपसे मनोवैज्ञानिक ढांचे में आबध्द किया है ।"[33] उनकी मनोविश्लेशणात्मक कहानियों में ' राजा रानी और संतान ' , नाश और निर्माण, मन के संकेत, आदमी जाना अनजाना, ये कहानियां अवतरित हुई हैं । इन कहानियों में इलाचंद्र जोश, अज्ञेय आदि की मनोविश्लेषात्मक कहानियों की तरह व्यक्ति की मानसिक ग्रंथियों का सूक्ष्म विश्लेषण नही है । केवल पात्रों के मानसिक आचरण का वर्णन है ।

' राजा रानी और संतान' यह बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानी है और पृष्टभूमि पारिवारिक जीवन है । लेखक ने इस कहानी में बच्चों के बालमन के स्थिती को बड़ी मार्मिकता के साथ स्पष्ट किया है । ' नाश और निर्माण ' इस कहानी के अंतर्गत वैयक्तिक चेतना का अंतमथ्रन है । इसमें ' मीनी ' नामक एक युवती के एक पात्रीय मनोचिंतन द्वारा कहानी रुपाकार ग्रहण करती है । ' मन के संकेत ' में अत्याधिक प्रेमाकर्षण में मन की एकात्मता और एकाग्रमन द्वारा अपने प्रिय के संकट का आभास पाना आदि मानसिक क्रियाओंका वर्णन हैं ।

' आदमी जाना अनजाना ' इस कहानी के अंतर्गत मियां एहसानअली खांनामक एक मनोरुग्ण व्यक्ति की मनोग्रंथि का विश्लेषण है । उसके मन में खुदा और सैतान को लेकर जीवनभर द्वंद्व चलता रहता है । इसी मानसिकता एवं मनोवैज्ञानिक घुटन से आत्महत्या करनेपर विवश करती है । इसमें नागरजी की मानवता दुःखी है । नागरजी ने असमाज में चित्रित मानसिक रुग्णता एवं मनोवैज्ञानिक घुटन में जखडे हुए लोगों के जीवन को दार्शनिक पृष्ठभूमि पर रखने की कोशिश की है और इस समस्या को हटाने का प्रयास भी किया है ।

4. **हास्य व्यंग्य मूलक कहानियां -**

नागरजी की अप्रसामाजिक यथार्थ परक कहानियों की तरह हास्य व्यंग्य मूलक कहानियों की संख्या भी अधिकांश रही हैं क्यों कि वह सामाजिक यथार्थवादी लेखक के साथ साथ एक श्रेष्ठ हास्य व्यंग्यकारी के रुप में भी सफल हुए है । हास्य - व्यंग्य यह नागरजी का शैलीप्रधान गुण है जो उनके संपूर्ण उपन्यास एवं कहानी साहित्य में व्याप्त हैं । नागरजी के संपूर्ण कहानी साहित्य में हास्य व्यंग्य का अदभूत मिश्रण है, परंतु जिन कहानियों का उद्देश्य केवल हास्यरस कि निर्मिति तथा व्यंग्य प्रवृत्ति हैं, उन्हें ही इस वर्ग के अंतर्गत रखा है । इसमें 'तुलाराम शास्त्री', पीपल की परी, भारतपुत्र नौरंगीलाल, कालदण्ड की चोरी आदि संग्रहोंकी कहानियां आती हैं । नागरजी ने आसपास के जन जीवन विचित्रचरित्र, मध्य वर्गीय जीवन की विकतियों तथा खोखलापन, जनसामान्य के अध:विश्वास, राजनीतिक बुराइयों आदि को हास्य व्यंग्य का विषय बनाया है । यथार्थ चरित्र चित्रण, बोलचाल की भाषा, स्वस्थ हास्य और मार्मिक व्यंग्य के मिश्रण के कारण ये कहानियां हृदयपर अमिटछाप छोड जाती है तथा पाठकों का उम्दा मनोरंजन करती हैं ।

नागरजीने हास्य के लिए कही भी अयथार्थ घटना, प्रसंग या पात्र का सृजन नही किया है । हास्य व्यंग्यात्मक कहानियों के सबंध में उनका कथन है " जिस हंसी में खसी होती है, उसका इन रचनाओं से तनिक भी संबंध नही है । मेरे मनका उल्हास किसी बात या घटना से लहरा उठता है तब ऐसी रचनाएं आपसे आप उमड पडती है ।"[34] उन्होंने देखी, सूनी या भोगी हुई घटना या चरित्र का ही वर्णन इन कहानियों में किया हैं । 'तुलाराम शास्त्री', 'बंगाली वैष्णव,' 'नवाबी चक्कर,

धूर्तरत्न 'लंगूर का बच्चा, डाक्टरी साईन बोर्ड, बप्पाजी गुलाम कयामत का दिन आदि कहानियोंमें जन जीवन के देखे हुए पात्रों के चरित्र की विशिष्ठताओं को हास्य व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया है ।

नागरजी की हास्य परक कहानियों में कटुता और तिक्तता के पुट को स्वाभाविक बचाकर उक्ति वैचित्र्य एवं लाक्षणिक शब्दों द्वारा स्वाभाविक हास्य उत्पन्न किया गया है । 'अश्क ' ने नागरजी की हास्यप्रियता को यथार्थ से समावित बताते हुए कहा हैं --

"हास्य व्यंग्य मूल रुप में उनकी रचनाओं की गम्भीरता यथार्थता, सोद्देश्यता में विद्युत गोट सा चमकता है । नागरजी का व्यंग्य पैना अचूक, सहसा हंसा देने वाला और द्रुष्टि प्रगतिशील है ।खड़ी बोली के बोल चाल के रुपों पर उनकी पकड पोढी है और इसके प्रयोग से वे ऐसा असर पैदा करते है जो मन को बांध लेता है ।" [35]

समग्रतः मे कहा जा सकता है, नागरजी की कहानियां भिन्न भिन्न प्रवृत्तियों को लेकर लिखी गई है । उन्होने अधिकतर सामाजिक और हास्य व्यंग्यात्मक कहानियां लिखी हैं ।

निष्कर्ष :-

हिन्दी कहानी का विकास पूर्ण रुपसे प्रेमचंद युग में हुआ । हमारे विवेच्च कहानीकार अमृतलाल नागर प्रेमचंद युग के कहानी कारों में से एक है । वे एक ऐसे सर्जक हैं जिन्होंने हिन्दी कहानी को नजदीक से निखारा और संवारकर उसे पूर्ण रुपसे विकसित गती भी दी । नागरजीने समाज में चित्रित हर समस्या को अपने विषय का केंद्र माना और अपने संपूर्ण कहानी साहित्य को सामाजिक एवं हास्य व्यंग्य से रुपायित किया। उनकी कहानियां सोददेश्यपूर्ण होते हुए उनमें दिखाई पड़ती है । नागरजी ने स्वतंत्रतापूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर समाज के धडकनों को छुआ है जैसे अपने मरीज के अंदर के रोग को उखाड़ फैलकर उसे रोगमुक्त करता है, उसी तरह नागरजीने समाज मे चित्रित परंपरा अन्याय, रुढ़ी एवं समस्या को अपने साहित्य द्वारा उखाड फैंकने की कोशिश की है ।

नागरजी ने साहित्य को स्वस्थ दृष्टि दी है । उन्होंने प्रत्येक वर्ग के जीवन को बहुत निकटता से देखा है । नागरजी मूलतः सामाजिक यथार्थवादी रहे हैं इसलिए उनकी अधिकांश कहानियां सामाजिक यथार्थ जीवनपर आधारित हैं । उन्होंने सामाजिक कहानियों के साथ साथ राजनीतिक मनोविश्लेषात्मक एवं हास्य व्यंग्य मूलक कहानियों का सृजन किया है । उनकी कहानियों में समाज सुधार और राष्ट्रीयता का गहरा पुट दिखाई देता है ।

संदर्भ सूची

1. अमिताभ वेदप्रकाश - हिन्दी साहित्य कहानी के सौ वर्ष - पृ. 9
2. बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्यांत - पृ. 176
3. अमिताभ वेदप्रकाश - हिन्दी कहानी के सौ वर्ष - पृ.10
4. वही प्र. 12
5. वही पृ. 10
6. डा.बत्रा सुदेश अमृतलाल नागर:व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 176
7. राय डा. सुबेदार - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का विकास पृ. 50
8. बत्रा डा.सुदेश अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 177
9. डा. अमिताभ वेदप्रकाश - हिन्दी कहानी के सौ.वर्ष - पृ. 10
10. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 177
11. वही - पृ. 177
12. अमिताभ डा.वेदप्रकाश - हिन्दी कहानी के सौ.वर्ष पृ. 18
13. बत्रा डा.सुदेश - अमृतलाल नागर;व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 178
14. बत्रा सुदेश अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एव सिध्दांत पृ.179
15. ठाकूर डा.बैकुण्ठनाथ- हिन्दी कहानी का शैली विज्ञान पृ. 2
16. बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्वं एवं सिध्दात पृ.178
17. नागर अमृतलाल-मेरी प्रिय कहानियां भूमीका पृ. 5
18. वही पृ. 5
19. बत्रा डा.सुदेश अमृतलाल नागर;व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 16
20. वही पृ.16

21. चौबे देवेंन्द्र - कथाकार अमृतलाल नागर पृ. 28

22. बत्रा डा.सुदेश अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एव सिध्दांत पृ. 185

23. वही पृ. 181

24. नागर अमृतलाल - मेरी प्रिय कहानियां पृ. 6.7

25. बत्रा डा.सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 182

26. वही पृ. 182

27. वही पृ.182

28. वही पृ. 180

29 वही पृ.183

30 वही पृ. 195

31 वही पृ. 200

32. नागर अमृतलाल - मेरी प्रिय कहानियां पृ. 54,55

33. बत्रा डा.सुदेश - अमृतलाल नागर: व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 204

34. नागर अमृतलाल - भारतपुत्र नौरंगीलाल पृ. 5

35. बत्रा डा. सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 181